

वैशाखी- खालसा की नींव से खेतों की मुस्कान तक

**[भक्ति, बलिदान और
भाइचारे का संगम- वैशाखी
की महिमा]**

वैशाखा का महत्व केवल कृषि तक सीमित नहीं, बल्कि यह सिख धर्म के लिए भी एक पवित्र और ऐतिहासिक दिन है। 13 अप्रैल, 1699 को आनंदपुर साहिब में श्री

वैशाखी सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक गौरव का भी अनुभव अवसर है। मेलों में लोक नृत्य, संगीत और हस्तशिल्पों की बहार देखते ही बनती है। पंजाबी लस्सी, सहारा का साग, मक्के की रोटी और मिठाइयों की मिठास इस पर्व को और स्वादिष्ट बनाती है। यह वह समय है जब लोग पुराने गिले-शिकवे भुलाकर एक-दूसरे के साथ खुशियां बांटते हैं। बच्चे, युवा और बुजुर्ग सभी इस उत्सव में एक साथ शामिल होते हैं, जिससे सामाजिक एकता और सहयोग की भावना को बल मिलता



वैशाखी महज एक तरिख नही, बल्कि एक ऐसी जीवत संवेदना है, जो खुशियों की लहर, कृतज्ञता की गहराई, बलिदान का गरिमा और एकता की सुगंध को एक साथ समेटे हुए है। यह पर्व हमें प्रकृति के प्रति श्रद्धा, समाज के प्रति निःस्वार्थ सेवा और स्वयं के प्रति अदृष्ट आत्मसम्मान का अनमोल पाठ पढ़ाता है। आज के युग में जब तनाव की छाया और अलगाव की दीवारों जीवन को घेर रही हैं, वैशाखी एक मधुर स्वर की तरह हमें बुलाती है—एक साथ

इसके सहन संदेश को हृदय में उजारकर मानना चाहिए। यह वह पवित्र क्षण है, जब हम प्रण ले कि इस अमूल्य संस्कृति के खजाने को न केवल संजोएँ, बल्कि इसे प्रेम और गर्व के साथ अगली पीढ़ियों तक पहुँचाएँ। वैशाखी की यह रात-बिगरी और जोश से भरी यात्रा हर हृदय में उमंग का सागर उड़ेल देती है, जैसे खेल की थाप पर थिरकता पंजाब सारी दुनिया को अपनी धुन पर नचाए। यह पर्व एकता, प्रेम और सम्मान का ऐसा अमर संदेश लिए आता है, जो जीवन के हर पड़ाव पर हमें प्रेरणा देता है, और हमें सिखाता है कि सच्ची समृद्धि हमारी संस्कृति के गर्व में ही बसती है।

प्रो. आरके जैन

(प्रकृति चिंतन) जलवायु परिवर्तन, सांस के लिए हवा भी नहीं मिलेगी।

विश्व में विकासशील देशों द्वारा चुनौतियाँ से जूझ रहे हैं, पहली भुखमरी यानी कि गरीबी दूसरी जलवायु में तीव्र परिवर्तन और यह दोनों एक दूसरे से गहरा संबंधित हैं। विकासशील तथा गरीब राष्ट्र एक ओर गरीबी तथा भुखमरी से लड़ते लड़ रहे हैं एवं गरीबी से छुटकारा पाकर गरिमायुक्त जीवन जीना चाहते हैं। इसके लिए वे अपने प्राकृतिक, वैज्ञानिक सधनों का दोहन करके विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं जिससे इनके सम्मुख कई चुनौतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इनके पास पैसायें रूप से आर्थिक वित्तीय पूंजी की कमी साथ ही उन्नत तकनीक का अभाव भी है। ऐसे में यह विकासशील राष्ट्र के विकास हेतु परंपरागत विकास सधनों पर आश्रित हो जाते हैं, जैसे विद्युत उत्पादन में कोयले का उपयोग करना, वाहनों में प्रत्युक्त धंधे की गुणवत्ता का निम्न होना, कारखानों की पुरानी मशीनों द्वारा कार्बन, सल्फर, नाइट्रोजन आदि तत्वों की बड़ी मात्रा में वायु को उत्सर्जित करना आदि अनेक। इन सब के कारण ग्रीन हाउस जैसे निमित्त हमने से ग्लोबल वॉर्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन घटनाओं को तीव्रता प्राप्त होती है।

अनेक गरीब देशों में सबसे बड़ा संकट विकास बनाम पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे को लेकर सामने आया है। जहां यह देश विकास की इच्छा तो रखते हैं पर दूसरी ओर विकसित देश गरीब देशों को पर्यावरण संरक्षण की सीख दे कर इनके संसाधनों पर इकट्ठा लगाने का प्रयास करते हैं। जिससे इनके अस्तित्व तथा संभुता पर गहरी चोट लगती है। यह एक बड़ी चुनौती के रूप में सामने आता है। विकासशील देशों को पर्यावरण संरक्षण जैसी बातें गरीबी के सामने एक चुनौती के रूप में दिखाई देती है। यदि ये देश भुखमरी, कृषि, कुपोषण, बेरोजगारी जैसे समस्याएं को सुलझाना चाहते हैं तो दूसरी तरफ पर्यावरण संरक्षण के साथ संतुलन बिठाना कठिन हो जाता है। आज विकसित देशों में अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, यूरोपीय, ऑस्ट्रेलिया और अन्य अमीर यूरोपीय देश पर्यावरण संतुलन की बात तो करते हैं पर जहां तकनीकी मदद या संरक्षण की बात को तो यह अपना हाथ पीछे खींचसाल देश जब भी विकास को प्राथमिकता देने का प्रयास करते हैं तो इसका परिणाम स्वरूप पर्यावरण को क्षति होना लाजमी होता है। इसके अलावा झेलने वैश्विक महाशक्तियों के दबाव भी झेलने पड़ते हैं। गरीब देशों के उद्योगों को खरीदने में बड़े बाजार या यूं कहें कि विकसित राष्ट्र गुणवत्ता की कमी, तकनीकी कमी कहकर तिरस्कृत तथा वापस करने से नहीं चूकते हैं। इस मामले में विकसित राष्ट्र का विकासशील, गरीब राष्ट्र के बीच एक गहरी खाई बन चुकी है और संयुक्त राष्ट्र संघ



पूकदशक बना इस मामले में हाथ में हाथ धरे बैठा रहता है। बड़ी जनसंख्या वाले देश जैसे भारत इंडोनेशिया एवं एशिया के अन्य देश विकसित राष्ट्रों के लिए एक बड़ा बाजार जरूर है, पर वहां पर भूखमरी और जलवायु परिवर्तन के मामले में ये सभी बड़े तथा विकसित राष्ट्र खामोश रहते हैं। विकासशील तथा निर्धन देशों में गरीबी, भूखमरी तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के कारण संघर्ष, शारीय संघर्ष, मानव अधिकार उल्लंघन, जातीयार्थ समस्या, अवादा आतंकवाद आदि गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं और और इनकी स्थिरता में बड़ी कमी आई है। पिछले विगत कुछ समय एक पन्नाक्रमों से शरणार्थी संसद् ग्रह सतक के विस्थापन अकाल बाढ़ तथा आतंकवाद के चिंताजनक वृद्धि हुई है, और यह सब प्रे विश्व के लिए चुनौती बन गया है। यह अलग बात है कि विकासशील राष्ट्रों के कमजोर क्षमता के कारण यह चुनौती उन देशों को बड़ी विकराल लगती है क्योंकि इससे पूंजीगत संसाधनों में बड़ी क्षति होती है जिस का संतुलन करना वहां की सरकारों पर बहुत भारी पड़ जाता है। गरीबी रेखा के नीचे लोग ज्यादा जीवन यापन करने लगते हैं। वैश्विक स्थिति का अध्ययन करें तो गरीबी भूखमरी जलवायु परिवर्तन से लड़ने किसी एक देश के लिए संभव प्रतीत नहीं होता, क्योंकि यह वैश्विक समस्या है। इसे सम्मिलित रूप से ही प्रयास कर समाप्त किया जा सकता है। यह तो तब है कि विकासशील राष्ट्रों को उन्नत बनाने तथा विकसित करने में बड़े तथा सक्षम राष्ट्रों को इन छोटे देशों गरीब देशों की तकनीकी विज्ञान और पूंजीगत सहायता प्रदान करनी चाहिए अपने महंगी खर्चीली परमाणु तथा अणु ब्रह्मा तथा मिसाइल बनाने की योजनाओं को एक तरफ रख विकासशील राष्ट्रों की खुलकर मदद करनी चाहिए। ऐसी परिस्थितियों में ही वैश्विक भूखमरी गरीबी एवं जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटा जा सकता है। भारतीय संदर्भ में यह जरूर कहा जा सकता है कि विगत 10 वर्षों में जलवायु परिवर्तन तथा गरीबी उन्मूलन पर बहुत ज्यादा प्रयास कर नहीं ये योजनाएं बनाई गई हैं। जैसे राष्ट्रीय हरित मिशन, राष्ट्रीय सतक

पर्यावास मिशन, राष्ट्रीय ऊर्जा संवर्धन मिशन पर बहुत सारी योजनायें बनाकर कार्य किया गया है। भारत देश अपनी योजनाओं में छोटे विकासशील राष्ट्रों को भी शामिल किया है और उनकी खुलकर मदद कर रहा है, यह विकासित राष्ट्रों के लिए एक उदाहरण भी है कि उन्हें छोटे तथा गरीब राष्ट्रों को खुलकर मदद करनी चाहिए।

संजीवनी ।

जब हवा भी ना मिलेगी।
इतने जंगल काटोगे
इतने कंक्रीट के जंगल बनाओगे
निश्चल नदिया की
धारा में इतना रोक लगाओगे
इतने ऊंचे बांध बनाओगे
तब शुद्ध कहाँ से हवा पाओगे।

सोचो जरा अपनों को रोको जरा
वनो का संरक्षण करो जरा
जंगल का भी विकास करो जरा
अब नहीं कर पाए तो कब भला
अगली पीढ़ी को क्या दे पाओगे
इस पर भी कुछ विचार करो जरा
शुद्ध हवा के लिए
तब तरस जाओगे भला।

अपनी सुख सुविधा में रोक लगाओ
फ्रिज एसी कार में ब्रेक लगाओ
घर आंगन में पेड़ ही पेड़ लगाओ
जरा प्रकृति को पास तो बुलाओ
चांदनी, चंदा को पास तो झुलाओ
पर्यावरण से अपना प्यार तो जताओ
वरना शुद्ध हवा कहां से पाओगे।

अब नहीं तो कभी नहीं कर पाओगे
कब अपनी इच्छाओं पर रोक
लगाओगे
पर्यावरण से ऐसे ही खेलते जाओगे
सांस लेने को
शुद्ध हवा भला कहां से पाओगे

हे मानव
भविष्य में हाथ मलते रह जाओगे।

संजीव ठाकुर

संपादकीय

मंदिर-मठों में दलितों की हिस्सेदारी एक विश्लेषण



वाला। हिंसा किसी भी समस्या का हल है ही

राकेश अचल

